जीवन - परिचय-

सन्त कबीर का जन्म संवत् 1455 (सन् 1398 ई ०) में एक जुलाहा परिवार में हुआ था । उनके पिता का नाम नीरू एवं माता का नाम नीमा था । कुछ विद्वानों का यह भी मत है कि कबीर किसी विधवा ब्राह्मणी के पुत्र थे , जिसने लोक - लाज के भय से जन्म देते ही इन्हें त्याग दिया था । नीरू एवं नीमा को ये कहीं पड़े हुए मिले और उन्होंने इनका पालन - पोषण किया । कबीर के गुरु प्रसिद्ध सन्त स्वामी रामानन्द थे । इनकी पत्नी का नाम लोई था । इनकी दो सन्तानें थीं- -पुत्र का नाम कमाल था और पुत्री का नाम कमाली । अधिकांश विद्वानों के अनुसार कवीर 1575 वि ० (सन् १५१८ ई ०) मगहर में स्वर्गवासी हो गए ।

साहित्यिक परिचय -

कबीर पढ़े - लिखे नहीं थे । उन्होंने स्वयं ही कहा है मसि कागद छूयो नहीं , कलम गह्यो नहीं हाथ । उन्होंने स्वयं अपनी रचनाओं को लिखा है । इसके पश्चात् भी उनकी वाणियों के संग्रह के रूप में रचित कई ग्रन्थों का उल्लेख . मिलता है । इन ग्रन्थों में ' अगाध - मंगल ' , ' अनुराग - सागर ' , ' अमरमूल ' , ' अक्षर - खण्ड की रमैनी ' , ' अक्षर - भेद की रमैनी ' , ' उग्रगीता ' , ' कबीर की वाणी ' , ' कबीर ' , ' कबीर - गोरख को गोष्ठी ' , ' कवीर की साखी ' , ' बीजक ' , ' ब्रह्म निरूपण ' , ' मुहम्मद बोध ' , ' रेखता विचारमाला ' , ' विवेक सागर ' , ' शब्दावली ' , ' हंस - मुक्तावली ' , ' ज्ञानसागर ' आदि प्रमुख हैं । अभी तक यह निश्चित नहीं किया जा सका है कि ये ग्रन्थ कबीर द्वारा ही रचित काव्य के संग्रह हैं अथवा नहीं ।

कबीर रहस्यवादी , समाज - सुधारक , पाखण्ड के आलोचक , मानवतावादी और समानतावादी कवि थे । इनके काव्य में दो प्रवृत्तियाँ मिलती हैं — एक में गुरु एवं प्रभुभक्ति , विश्वास , धैर्य , दया , विचार , क्षमा , सन्तोष आदि विषयों पर रचनात्मक अभिव्यक्ति तथा दूसरी में धर्म , पाखण्ड , सामाजिक कुरीतियों आदि के विरुद्ध आलोचनात्मक अभिव्यक्ति देखने को मिलती है ।

कृतियाँ -

कबीर की वाणियों का संग्रह ' बीजक ' के नाम से प्रसिद्ध है, जिसका संकलन इनके शिष्य धर्मदास ने किया था, जिसके तीन भाग हैं-

1. **साखी** — कबीर की शिक्षा और उनके सिद्धान्तों का निरूपण अधिकांशतः ' साखी ' में हुआ है । इसमें दोहा छन्द का प्रयोग हुआ है ।
2. **सबद** - इसमें कबीर के गेय - पद संगृहीत हैं । गेय - पद होने के कारण इनमें संगीतात्मकता पूर्ण रूप से विद्यमान है । इन पदों में कबीर के अलौकिक प्रेम और

उनकी साधना - पद्धति की अभिव्यक्ति हुई है ।

3. **रमैनी** – इसमें कबीर के रहस्यवादी और दार्शनिक

विचार व्यक्त हुए हैं । इसकी रचना चौपाई छन्द में हुई है ।